

૩૬૯

પ્રસ્તાવના.

અરાઢ પુરાણમાંથી નીકળેલો સાર
 રામ તારક મંત્ર આ કલિયુગમાં સુ-
 ગમ અને શહેલ સુદાતા કલ્યાણકારી
 મોક્ષનું ધામ રામ મંત્ર શિવાય બી-
 જા દીર્ઘ શાધનો બનવાને અનુકૂલ
 પડે તેવું નથી. માટે પોતાનું હીત
 વીચારવાને બીજા કામોની અંદરથી
 થોડો અથવા જેમ બને તેમ વધારે
 વખત કાઢી આ મંત્ર જપવાને ચુ-
 કવું નહી. તે નીલ અભ્યાસ કર્યા
 પછી એના ગુણવડે પોતાનું અંત-
 રણ નિર્મલ થશે. જેમ કાર્ક-
 કને મીઠી વસ્તુ અથવા

વાનો અભ્યાસ પહેલાં ન હોય તેને
 ઊંમર લાયક પુરુષો થોડા દીવસ ખાતાં
 શીખવે છે. પછી તેને તે વસ્તુનો
 સ્વાદ ચાખ્યાથી (ગલે પચાથી) તે
 છુટતું નથી. જેમ કડવી ઝેહેર જેવી
 વસ્તુ અરીણુનો માણસ ખાવાનો અ-
 બ્યાસ કરે છે તો તે પછી છુટતું
 નથી. તો ખરેખરી વાત છે કે કડવું
 ન છુટે તો મીઠો પદારથ છુટેજ નહીં
 વળી ભાગવતના એકાદસ સુધીમાં
 દ્રવ્યોંત છે કે ઈએલને ભમરી ડંખ
 મારે છે તો તે ઈએલ ભમરી ખ-
 ની જતએ છે તેમ સોગતને અભ્યા-
 સેવો થાએ. તેવો સ્વભાવને પા-
 રામ નામ ભજવાનો

છે તે બારાબર આ જુદી દુનીયા-
માં મીઠી વસ્તુ બીજી એકે નથી. ને
તે અંત કાલની વખતે એ વગર
કોઈ સાહય કરનાર નથી. જે વરં
વાર અભ્યાસ કર્યો હશે તો તે વ-
ખત પોતાના ધ્યાનમાં તથા વિચાર-
માં પ્રત્યક્ષ મુર્તિમાન દર્શનનો લાભ
થઈ ચરણમાં વાસ સેવે. બીજી વસ્તુ
વધારે સંભારી તેનો સ્નેહ થાય તો
અંતકાલે દુઃખમાં ડુબી ડુબી ફરી
જન્મ ધારણ કરવો પડે. ને રામ
નામથી સરવે દુઃખ દુર થઈ કેવલ
પરમાત્માના ચરણનું સુખ (મોક્ષ)
મલે જે કામ કરવું તેમાં સારો
ફાળો ત્યારે બીજા કામો.

આ વસ્તુનું વધારે સ્મરું થાયતો તે
 વીગતી પામે. રામ ભજવાથી રામ
 રૂપ થઈ જાય. જેમ ખાલના પા-
 ણી વરસાદના પાણીમાં ભળી નાળા
 માં થઈ નદીમાં જાય એટલે ગમે
 તેવું ગંધાતુ અગર ખરાબ પાણી
 હોય પણ ગંગામાં મળ્યું એટલે એ
 રૂપ થયું તેમ મનુષ્ય ગમે તે જાત
 નુ હોય પણ સારા ભાવથી સ્મરું
 કરી ખોટી વસ્તુના સંગથી ખીટું તો
 જરૂર તેનું કસ્યાણ થયા વીના રહેજ
 નહી એ શાસ્ત્રનો શિક્ષાંત છે ને આ
 કળીના અંતમાં ધર્મની બાબતમાં
 ના શેષ કાઢનાર નર વીરલા છે તેથી
 ના પાત્રને વગર પૈશે સસ્તામાં સ-

સ્તુ જીવનુ કલ્યાણ કરવાને નામ જ
પવાથીજ સુખ આપ્યું છે તે ડાહ્યા
માણસો કદી ચુકસે નહીં એ જીવા-
સાથી આ પુસ્તક લખ્યું છે.

શ્લોક.

જાઙ્યંધિયો હરતિ સિં ચતિ વાચિ સત્યં
માનોન્નતિં દિશતિ પાપમપા કરોતિ॥
ચેતઃ પ્રસાદયતિ દિક્ષુ તનોતિ કીર્ત્તિં
સત્સંગતિઃ કથય કિંન કરોતિ પુસાં ૧

ટીકા—કહો સત્સંગતિ સું નથી
કરી સકતી અજ્ઞાન બુદ્ધીને હરણુ કરી
સત્ય બોલાવે છે. પાપને ત્યાગ કરાવી
માન પમાડે છે. ચીતને પ્રસન્નતા
રી દીશા દીશાઓમાં કીર્તિને

श्रीगणेशसायनमः

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

રામ રામ રામ રામ રામ રામ

રામ રામ રામ રામ રામ રામ

રામ રામ રામ રામ રામ રામ

રામ રામ રામ રામ રામ રામ

રામ રામ રામ રામ રામ રામ

રામ રામ રામ રામ રામ રામ

રામ રામ રામ રામ રામ રામ

રામ રામ રામ રામ રામ રામ

રામ રામ રામ રામ રામ

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम राम

ઈશ્વરનું ભજન કરવું તેમાં ની-
ચેના દશ દોરા રહીત ભજન કર-
નારને કૃળ પ્રાપતી થાય છે.

૧ સત પુરૂષોત્તી નીંદા કરવી
નહીં.

૨ નાસ્તીકની પાસે નામના મ-
હીમાનું વખાણ કરવું નહીં.

૩ વિષ્ણુ અને શિવ એ બેમાં
જુદાપણું માનવું નહીં.

૪ પુરાણ ઉપર વિશ્વાસ રાખવો.

૫ વેદ ઉપર શ્રદ્ધા રાખવી.

૬ ગુરુનાં વાક્યનો વિશ્વાસ રાખવો.

૭ ઈશ્વરનું નામ ખીજાં સાધા-

નામ જોવાં ન માનવાં.

૮ શાસ્ત્રમાં ના પાડેલાં તેવાં આચરણ કરવાં નહીં.

૯ સંધ્યા વંદન ઈત્યાદિક નીત્યકર્મ કરવા ચુકવું નહીં.

૧૦ ખીજા ધર્મના જેવી નામને વીશે તુલ્યના કરવી નહીં.



વિશ્વપ્તી કે.

આ શ્રી રામનામાવળીનું પુસ્તક
જે સર્વે સજ્જનોને અર્પણ કર્યું છે તે-
નો હમેશાં દરેક સુચ પુરુષ પ્રસ્તા-
વનામાં લખ્યા પ્રમાણે પાઠ કરસે એ-
વી આશા છે તેમાં ચુક થસે તો તે
દોસને પાત્ર થસે. માટે દરરોજ આ-
છામાં આછો એક વખત પણ સં-
પૂર્ણ પાઠ થવો જોઈએ. માટે આ-
શા છે કે દરેક ભક્તજન તેમ કર-
વા ચુકશે નહીં.



